Atmaj

Academic Research Journal

An International Peer-Reviewed Research Journal

ISSN: 2348 - 9456

Impact Factor 5.450

Volume-XVIII, Issue -XX, July-Dec. - 2022

Editor-In-Chief

Dr. Dilkhush Patel

Volume – XVIII Issue – XX, July – Dec. - 2022

ISSN: 2348-9456
Impect Factor : 5.450

Content of the Table

Sr. No.	Title of the Paper	Author	Page No.
1	A STUDY OF HIGHER SECONDARY SCHOOLS PRINCIPALS HAVING UNDER EDUCATIONAL ACHIEVEMENT	Dr.Hareshkumar M. Patel	1
2	Involvement of APMC's in Agricultural Selling	Mr. Prahlad R. Suthar	4
3	EFFECTS OF COMBINED TRAINING ON SELECTED BIO MOTOR ABILITY, BIO CHEMICAL AND PHYSIOLOGICAL PARAMETERS	Nileshkumar D. Limbachiya	8
4	THEME OF NATURE IN WILLIAM WORDSWORTH'S POETRY	Mayur K. Vyas	15
5	EFFECT OF YOGA INTERVENTION FOR PSYCHOLOGICAL WELL BEING AMONG BRONCHIAL ASTHMATIC PATIENTS: A PILOT STUDY	Niyanta Joshi	18
6	ADJUSTMENT AMONG COLLEGE STUDENTS OF THE SABARKANTHA DISTRICT	Mehul D. Parmar	24
7	A Study on Computerised Accounting System improves sales in Small and Medium enterprises with reference to the size of the business	Kinnariben A. Modi	29
8	શ્રી ગ્રામ વિદ્યાલય લોકશાળા – ધજાળાનું શૈક્ષણિક અને સામાજિક ક્ષેત્રે પદાન	રાજુભાઇ મકવાણા	32
9	अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कला निरूपण	प्रा.डॉ. सोलंकी मंजुलाबेन एन.	36
10	"બાંધકામક્ષેત્રના આંતરરાજ્ય સ્થળાંતરિત શ્રમિકોની રોજગારી અને આર્થિક પરિસ્થિતિનો અભ્યાસ મહેસાણા તાલુકાના સંદર્ભમાં"	ડો. પૂનમબેન. એમ. રાવલ	41
11	"ગુજરાતમાં કૃષિ અને ઉદ્યોગ વચ્ચે સંબંધ અને સંભાવનાઓ"	PARTH.V.PRAJAPATI	48
12	जगदीश चंद्र कृत 'धरती धन न अपना' उपन्यास में दलित चेतना एवं वर्ण संघर्ष	गीताबहन बी.चौधरी	52
13	The Voice of the Subalterns in 'Karukku'	Parmar sejalben kanjibhai	56
14	MIRZA GALIB 'S "DIWANE GALIB" AND SHRI JAGANNATH PATHAK 'S "GALIB KAVYAM" -AN INTRODUCTION	Dr. Unnati B. Bhavsar	64
15	સ્મૃતિઓમાં કૃષિકર્મ વર્ણન	DR. Meeta J. Vyas	69

ISSN: 2348-9456
Impect Factor : 5.430

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कला निरूपण

प्रा.डॉ. सोलंकी मंजुलाबेन एन.
आर्ट्स कॉलेज - मोडासा

कला भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। जिसने भारत को विश्व की सभी संस्कृतियों में श्रेष्ठ स्थान प्रदान किया है। भारतीय कला हस्त-कौशल, बौध्धिक वैभव हृदय के सौंदर्य और आत्मीय आनन्द से परिपूर्ण है। भारतीय कलाओं की सहस्र वर्ष पुरातन धरोहर को सुरक्षित रखने का कार्य हमारे साहित्यशास्त्र ने किया है। संस्कृत भाषा में कलाओं की सर्वाधिक अभिव्यंजना हुई है। संस्कृत साहित्य में कला विषयक सामग्री तीन प्रकार से प्राप्त होती है।

१ **शिल्प ग्रंथो में -**

जैसे विश्वकर्मा प्रकाश, शिल्परत्न, वास्तु रत्नाकर, संगीत रत्नाकर, नृत्यअध्याय आदि शिल्प शास्त्र के ग्रंथोमें कला विषयक विवरण प्राप्त होता है।

२ **अन्य शास्त्र में गौणरूप से –**

संस्कृत ग्रंथो के शास्त्रीय ग्रंथ जैसे कामसूत्र, विष्णुधर्मोत्तरपुराण, भविष्यपुराण, मत्स्यपुराण, गरुडपुराण, स्कंदपुराण आदि पुराणों में, वास्तुकला के ग्रंथो में, नाट्यशास्त्र में, अमरकोश में, बृहत्संहितामें, शुक्रनीति, आदि ग्रंथो में कला का लक्षण और परिगणना प्राप्त होती है।

३ **साहित्य कृतियों में संदर्भ के रूप में –**

संस्कृत साहित्य की महत्व की कृतियों में संदर्भ के रूप से कला का निरूपण हुआ है जैसे रामायण, महाभारत, नाट्य, महाकाव्य, कथा, आख्यायिका, चम्पू काव्य आदि साहित्य में विपुल रुप से कला संदर्भ प्राप्त होता है। संस्कृत साहित्य में कालिदास, बाणभट्ट एवं राजशेखर की कृतियों में भी कला संबंधी सामग्री प्राप्त होती है। कला शब्द कल् धातु से निष्पन्न हुआ है। पाणिनीय धातु अनुसार उनका अर्थ गति और संख्यान है। कला का संपूर्ण अर्थ है – कला लोकोत्तर सर्जन की प्रक्रिया है। जिसके द्वारा कला सर्जक एवं सहृदय की चेतना संकीर्ण भौतिक धरातल से रसास्वाद या आनन्द की लोकोत्तर अवस्था में 'गमन'करती है।[१] नाट्यशास्त्र के कर्ता आचार्य भरत कला के बारे में लिखते है – त्रैलोक्यस्य नाट्यं भावानुकीर्तनम् ।[२] अर्थात् इस देव सृष्टि को देखने के पश्चात् जो भाव कलाकार के मन में उठते है उनका कीर्तन कला है।

कला की संख्या के बारे में शुक्लयजुर्वेद, कामसूत्र, बौध्धग्रंथ-ललित विस्तर, शुक्रनीति, प्रबंधकोश आदि में विस्तृत विवेचन हुआ है। भारतीय परंपरा में कला की संख्या चोंसठ मानी गई है। कामसूत्र में चोंसठकला का विवरण है। अन्यग्रंथो में इससे अधिक भी संख्या का वर्णन है। चोंसठ कला में से मुख्यतया इस तरह है। (१) गीतम् (२) वाद्यम् (३) नृत्यम् (४) चित्रकला (आलेख्यम्) (५) विशेषकच्छेद्यम् (६) तण्डुलकुसुमबलिविकारा: - अर्थात् पूजा के लिए अक्षत एवं पुष्पो को सजाना। (७) पुष्पास्तरणम् – पुष्पमञ्चा (८) दशनवसनांगराग:- दांत एवं शरीर के अंगो को रंगना। (९) मणिभूमि का कर्म:- भूमिको मणियों से (१०) शयन रचनम्। (११) उदकवाद्यम् - जलवाद्य (१२) उदकाघात -उलक्रीडा के समय कलात्मक ढंग से जल को उछालना। (१३) चित्रयोग:- औषधि, मणि, मंत्र आदि के प्रयोग। (१४) नेपथ्य प्रयोग:- वेशभूषा धारण की क्रिया। (१५) कर्णपत्रभंग :- हाथी दांत के पतरो आदि से कर्णभूषण की रचना करना। (१६) भूषणयोजनम् :- आभूषण निर्माण की कला। (१७) ऐन्द्रजाल :- जादु का खेल। (१८) पानक रस रागासव